

1789 की फ्रांसीसी क्रांति केवल फ्रांस की नहीं, बल्कि पूरे यूरोप के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों की परिणति थी। इस क्रांति को समझने के लिए आवश्यक है कि हम उस समय यूरोप के प्रमुख देशों की स्थिति का अध्ययन करें।

1. फ्रांस

फ्रांस में राजा लुई सोलहवाँ (Louis XVI) का निरंकुश शासन था।

समाज तीन वर्गों में विभाजित था—

- (1) पादरी वर्ग (Clergy),
- (2) कुलीन वर्ग (Nobility),
- (3) सामान्य जनता (Commoners)।

पहले दो वर्ग विशेषाधिकार प्राप्त थे, जबकि तीसरा वर्ग करों का भार वहन करता था।

आर्थिक संकट, भारी कर, दरबार की विलासिता और जनता की गरीबी ने असंतोष को जन्म दिया।

2. इंग्लैंड (Britain)

17वीं शताब्दी की ग्लोरियस रिवॉल्यूशन (1688) के बाद इंग्लैंड में संवैधानिक राजतंत्र (Constitutional Monarchy) की स्थापना हो चुकी थी।

राजा की शक्तियाँ सीमित थीं और संसद सर्वोच्च थी।

यहाँ राजनीतिक स्थिरता और औद्योगिक क्रांति के आरंभ ने समाज को सशक्त बनाया।

इंग्लैंड की स्थिति फ्रांस के विपरीत थी, जिससे फ्रांसीसी जनता को संवैधानिक शासन की प्रेरणा मिली।

3. प्रशा (Prussia) और ऑस्ट्रिया

ये दोनों जर्मन राज्यों में सर्वाधिकारवादी (Absolutist) शासन प्रचलित था।

राजा या सम्राट सर्वोच्च था और जनता के पास राजनीतिक अधिकार नहीं थे।

तथाकथित "उजाले के निरंकुश शासक" (Enlightened Despots) जैसे फ्रेडरिक महान (Frederick the Great) और जोसेफ द्वितीय (Joseph II) सुधार के समर्थक थे, परंतु उनका शासन भी केंद्रीकृत और शासक-प्रधान था।

4. रूस

रूस में कैथरीन द्वितीय (Catherine the Great) का शासन था, जो यूरोप की शक्तिशाली सम्राज्ञी मानी जाती थी।

वहाँ दासता (Serfdom) प्रचलित थी और किसानों की स्थिति दयनीय थी।

शिक्षित वर्ग में यूरोपीय उदार विचारों का प्रभाव बढ़ रहा था, जो आगे चलकर 19वीं सदी के क्रांतिकारी आंदोलनों में प्रकट हुआ।

5. स्पेन और इटली

इन क्षेत्रों में भी धार्मिक कट्टरता, राजशाही की निरंकुशता और आर्थिक जड़ता विद्यमान थी।

यहाँ चर्च का प्रभाव बहुत गहरा था और जनता को किसी भी प्रकार की राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी।

निष्कर्ष:

1789 से पहले का यूरोप राजशाही, असमानता और आर्थिक शोषण से ग्रस्त था। केवल इंग्लैंड को छोड़कर लगभग पूरे यूरोप में जनता के अधिकारों का अभाव था। ऐसे वातावरण में जब फ्रांस में स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के विचार उभरे, तो उन्होंने पूरे यूरोप की पुरानी व्यवस्थाओं को चुनौती दी। इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति केवल फ्रांस की घटना नहीं, बल्कि समग्र यूरोप की सामाजिक चेतना का विस्फोट थी।